International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 10 Issue 02, February 2020
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell’s Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

lLd`r lkfgR; Hkkjrh; jktuhfrk dkfVY;L; ;kxnkue

MkO lfork 'kek
,e0 ,0] ih0,p0Mh0
$2 lLdr f'kf{kdk
e-j-n-ck-m-fo] lhrke<h

lLdr साहित्याकाश में चाणक्य या कौटिल्; dh çflf) dk ey dkj.k उनकी राजनीति–विष; ग्रन्थ अर्थशास्त्र है। यद्यपि अर्थशास्त्रके अलावा भी चाणक्य ने तीन और ग्रन्थ लिखें। परन्तु अर्थशास्त्र में वर्णित राजनीतिशास्त्र सर्वाधिक प्राचीन नीति है। भारतीय राजनीति का विवेचन अर्थशास्त्र के अन्तर्गत हुआ है। कौटिल्य का अर्थशास्त्र राजनीति का प्रौढ़ ग्रन्थ है] ftll irk pyrk g fक इस शास्त्र का इस देश में पर्याप्r fodkl gk pdk FkkA xg;l=k vkj egkHkkjr e ge jktuhfr dk o.ku feyrk gA ofnddky e gh lHkk vkj lfefr uked jktuhfr lLFkk, cu pdh थी। महाभारत में अर्थशास्त्र के प्रथम रचयिता ब्रã vkj mudh ijEijk dk चलाने वाले शिव, इन्द्र, वृहस्पति और उशनस् का वर्णन है। महाभारत में भी कुछ अंशों में राजनीति का वर्णन है।

कौटिल्य (चाणक्य या विष्णुगुप्त) का अर्थशास्त्र चतुर्थ शती ई0पू0 की रचना है और यह अपने विषय का सर्वाधिक प्राचीन ग्रन्थ है। इसमें ogLifr] ckgnfUri=] विशालाक्ष और उशनस का आचार्यो के रूप में mYy[k vk;k gA ble jktrU= lok³xi.k o.ku 15 vf/kdj.kk vkj 180 çdj.kk e gvk gA çR;d çdj.k v/;k;k e foHkkftr gA rFkk अध्यायों में गद्यभाग में पद्यों का समावेश करके पूर्वस्थापित सिद्धांतों का

l{ki e mYyख किया है। आचार्य दण्डी के दशकुमारpfjr uked गद्यकाव्य से पता चलता है कि विष्णुगुप्त के अर्थशास्त्र में 6000 श्लोक थे। अर्थशास्त्र में लेखन के विचार अनुभव तथा यथार्थ पर आधारित हो। परवर्ती राजनीति सम्बंधी ग्रन्थों पर अर्थशास्त्र का व्यापक प्रभाव है। bl ग्रन्थ को सर्वप्रथम 1909 ई0 में मैसूर के डॉ0 आर0 शाम शास्त्री ने प्रकाशित किया था। यह ग्रन्थ प्राचीन भारत का ग्रन्थकार कहलाता है। dkfVY; d jktuhfr fl)kr jktrU= ij vk/kkfjr g fdUr o fujdश राजतन्त्र के समर्थक नहीं हैं। उनका स्पष्ट मत है कि राजा का सबसे cड़ा कर्त्तव्य प्रजा को सुख और आनन्द पहुँचाना है। उसे राज्य में शान्ति ,o 0;oLFkk djd turk d thou vkj /ku dh j{kk djuh pkfg,A

राजा का दूसरा बड़ा कर्त्तव्य विदेशी राज्यों एवं पड़ोसी शासकों पर ध्यान रखना तथा स्वराष्ट्र की रक्षा हेतु युद्ध करना है। इन दो कर्त्त0;k dk अर्थशास्त्रdkj u rU= vkj voki dgk gA bud vfrjDr dkfVY; u अपने अर्थशास्त्र में प्रशासन–संबंधी सिद्धांतो तथा अधिनियमों का वर्णन किया है। विजिगीषु राजा द्वारा साम्रज्य निर्माण हेतु अनुष्ठेय विधियों और नियमों का भी अर्थशास्त्र में प्रतिपादन किया गया है। अर्थशास्त्र में भाग्यवाद के स्थान पर पुरूषार्थवाद की प्रतिष्ठा की गई है। इस प्रकार अर्थशास्त्र एक अनुपम कृति है और उसमें छोटे से बड़े सभी राजोचित fØ;k&dykik dkfooj.kkRed vkykpuk gA उसके कुछ प्रमुख विषयों की rkfydk vf/kdj.kØe l bl çdkj g &

1- fou;kfoकारिक– राजवृत्ति, वार्त्ता, राजर्षि, काव्यवहार, अमात्य, xlrpj] e=kf/kdkj jktnrk dh fu;fDr] jktHkou & fuek.kA

2- अध्यक्ष प्रचार – जनपदनिवेश दुर्गविधान समाहर्त्त के कार्य आय–व्यय d LFkku lo.kk/;{kA

3- /keLFkh; ¼U;k;foHkkx½ & nhokuh vkj Qkt nkjh lEc/kh fooknk ij fopkj fookg d dkuu] oLr foØ;] _.k d dkuu] ?kjkgj etnjk d fu;e Mkdk ekjihVkA

4- ;kxofÙk & jkt depkfj;k dh çtk dh ihMk igpku l jkduk राजकोष पढ़ाने उपाय मृत्यों के भरण–पोषण की विधि।

5- e.Mykfu& jkt e=h vkfn d x.kk d o.kuA

6- okMx.य – वृद्धि और क्षय शत्रु के साथ ;) vkj lfU/k ijkftr jktk d lkFk 0;ogkjA

7- 0;lukf/kdkjd & jktk ij vku oky foifÙk;k dk o.ku jkT; lkj आने वाले संकट, पुरूषो की विपत्तियाँ।

8- अभियास्यत्कर्म – सेना की तैयारी सेना का नाश प्रयाण बाहरी और Hkhjrh vkifÙk;k

9- lkxkfed & luk dh Nkouh luk dk çkRlkgu] 0;g vkj çfr0;g] ;) d ;kX; Hkfe] gkFkh jFk vkfnA

10-संधवृत – भेद के प्रयोग और विषादि के द्वारा शत्रुओं को मारना।

11-vkcyh;l& jktnr d dek dk o.ku cf)HkÙkk l ;) dju d उपाय शत्रु के सेनापतियों के वध का ढंग, शत्रु–सेना को उनके उपायों ये वश में करना।

12-nxyHHkkik; &शत्रु के दुर्गो को प्राप्त करने के उपाय, जीते हुए प्रान्तों में शान्ति स्थापित करना।

13-आषनिषदिक –शत्रु के विनाश के लिए औषधियों के प्रयोगो का वर्णन, अद्भूत औषधियों से और मंत्रों का वर्णन, औषधियों से भूख l;k l feVkukA

14-तंत्र–युक्ति– अर्थशास्त्रीय शब्दों की परिभाषा। इस तरह कौटिल्य ने jktrU= dk l0;ofLFkr lxfBr dju gr ftru Hkh uhfr lxr l=k dk vf/kdरणों में सभावेशित किया वे समय के कसौटी पर fuYdy [kj fl) g,A

dkfVY; का अर्थशास्त्र का संस्कृत–साहित्य पर व्यापक प्रभाव पड़ा। कामन्दक का सुप्रसिद्ध ग्रन्थ नीतिसार अर्थशास्त्र को प्रेरणा लेकर रचा गया है। जैन सोमदेव, सुरी के नीतिवाक्य पर अर्थशास्त्र का प्रभाव है। हेमचन्द्र d y?kअर्हन्नीति नामक ग्रन्थ पर भी इसका प्रभाव है। शुक्रनीतिसार 2200 श्लोक का अर्थशास्त्र संबंधी ग्रन्थ है। अन्य राजनीतिशास्त्र ; gA Hkkt dk 0;fDrdYir:] चन्द्रेश्वर का नीतिरत्नाकार तथा नीतिप्रकाशिका आदि।

jktuhfr d {k= e vkpk; dkfVY; dk LFkku vf}rh; gA कौटिल्य द्वारा रचित कृतियों में अर्थशास्त्र, नीतिशास्त्र एवं चाणक्य नीति अत्यन्त प्रभावशाली होने के कारण राज्य एवं शासन के क्षेत्र में एक अद्वितीय कृति है। कौटिल्य का अर्थशास्त्र (Economics½ ugh vfir jktuhfrd jpuk gA ;Fkk & dkfVY;u ujUnkर्थे शासनस्य विधिःकृतः अर्थात् राजा के लिए शासन व्यवस्था का विश्लेषण।

jkT; e /ke] dkuu] jktuhfr] 0;kikj] m|kx] dfr vkfn fofHkUu विषयों का समायोजन इसमें परिलक्षित होता है। 15 अधिकरणों में विभक्त

;g xUFk ;Fkk & fou;kf/kdkfjd v/;{k] çpkj /keLFkh;] dkjd j{k.k] योगवृत, प्रकृतियों के गुण, षाड्गुण्य व्यसनाधिकारिक, अभियास्यत कर्म, lxkfमक संघ वृत, आवलीयस, गुर्गमोपाय, औपनिषदिक तथा तंत्रयुक्ति।

jkT; d lIrkx e çFke Lokeh gkrk gA jkt k dk /ke e :fp रखने वाला दूरदर्शी, सत्यवादी, महत्वाकांक्षी, अथक, परिश्रमी, गुणियों की पहचान और आर्डर करने वाला, शिक्षा प्रेमी योग्यef=;k l ;Dr rFkk mPp dy e mRiUu gkuk pkfg,A

vkekR; & jkT; dk nljk çe[k vx vkekR; vFkkr e=h ijkfgr सेनापति व युवराज दौवारिक अंतर वैशिक प्रशस्ता, समहर्त्ता, सन्निधाता, dkroky] ikj 0;ogkfjd lHkk/;{k n.Miky] nxiky rFkk vkVfod gkrk gA jkt k fdruk Hkh x.koku D;k u gk vkekR; ;fn x.koku vkj ;kX; न हो तो शासन की संफलता नहीं हो सकती है।

tuin & jkT; dk rhljk vx tuin gkrk gA ble e[;r;k jkT; dh Hkfe rFkk turk gA

nx&jkT; dk pkFkk e[; vx nx gA jkt k dk tuin dh j{kk के लिए सीमांत प्रदेश म nx cukuk pkfg,A dkfVY; d erkfcd nx pkj çdkj d gkr g & ty l f?kjk gvk] pVVkuk ,o iork l f?kjk gvk] e:LFky e cuk nx rFkk dkVnkj >kfM;k l cuk nxA

कोष – प्रजा के कY;k.kkर्थ एवं राज्य की प्रगति के लिए कोष पर jkt k dk vf/kd fuHkj jguk pkfg,A

luk & bld vUrxr gkFkh] ?kkMk] jFk rFkk jkT; dh lj{kk d लिए चतुरंगिणी सेना आवश्यक है। सैनिकों को राज्य के प्रति निष्ठावान rFkk jkT; dh j{kk d fy, lno rRij jguk pkfg,A

dkfVY; u llrkx d vfrjDr lke] nke] n.M] Hkn bR;kfn dk प्रयोग आन्तरिक प्रशासन हेतु उपयुक्त ekuk gA

dkfVY; d vulkj pkj çdkj dh fo/kk, g & vkUohf{kdh अध्यात्म या दर्शन विधाख त्रयी (ऋग, यजु,साम) वार्ता, कृषि पशुपालन वाणिज्य तथा दण्डनीति के अन्तर्गत राजनीतिशास्त्र। यथ्ज्ञा–आन्वीक्षिकी गयी वर्त्ता दण्डनीतिश्च शाश्वती।

lkjr% ;g lofofnr g fd vkpk; dkfVY; dk ;kxnku lLdr साहित्य एवं भारतीय राजनीति के क्षेत्र में प्रशंसनीय रहा है।

निष्कर्ष यह है कि भारत में नीतिपरक ग्रन्थो–पंचतन्त्र] हितापदेश आदि में ही नहीं वरन् महाकाव्यों में भी राजनीति विषयक सिद्धांत मिलते gA egkdfo भारवि का राजनीति विषयक् ज्ञान किरातार्जुनीयम् में स्पष्ट परिलक्षित होता है। अर्थशास्त्र भारतीय राजनीति&lc/kh lokf/kd çkphu miyC/k xUFk g tk bldh çkphurk ,o ln< ijEijk dk |krd gA

le; Øe l jktuhfr dk Lo:Ik Hkh cnyrk x;kA dkfVY; d le; jktr= Fkk] vr,o dkfVYय के अर्थशास्त्र में राज और विषयक uhfr lekoशित है। अर्थशास्त्र अर्थ का rkRi; gA jktk vkj çtk dk अर्थ। इस प्रकार अर्थशास्त्र की अभिव्यक्ति है, वह विद्या जो राजा और राष्ट्र को अर्थवान् व समृद्धशाली बना सके। राजा के संबंध में कौटिल्य का स्पष्टतया कहना है –

Þfo|kfouhrk jktk fg çtkuk fou; jr%A

vuU;k iFoh Hk³Dr loHkrfgr jr%AA

vFkkr jktk leLr çkf.k;k d fgr e jr jgrk g rHkh og vH;n; dj ldxkA

परन्तु बदलते परिवेश में राजा का स्वरूप बदला जो पहले राजतंत्र था अब गणतंत्र हो गया। परन्तु राज्य के शासन का स्वरूप बदलने से ogk jkT;kfpr fØ;k rk ugh cnyrh gA jkT; dk lpk: :Ik l pyku के लिए उनका विभाग अध्यक्ष तो किसी न किसी रूप में रहता है। विश्व परिदृश्य में राज्य को स्थापित करने तथा दूसरे देशों के साथ मित्रवत् lke¥tL;i.k lc/k rk cukuk gh iMrk g ftll jkT; dk fodkl] foKku] 0;kikj] dyk] lekftd] vkfFkd lHkh {k=k e हो सके। शत्रु देशों d lkFk dl 0;ogkj gk \ fdl rjg vk/kfud Kku foKku d tfj; mUur fdLek e jMkj fel kby एवं सामरिंक अनुसंधान हो कि विश्व के तमाम देश उस राज्य के वर्चस्व का लोहा माने।

मेरा मानना है कि कौटिल्य के अर्थशास्त्र का सत्व या निचोड़ सभी युग में प्रांसगिक है। आवश्यकता इस बात को है कि इस तत्व का कितना उपयोग हम राज्य विकास में कर पाते है। कौटिल्य की अर्थशास्त्रीय नीति वह स्टेम सेल (मास्टर कोशिका) है जो किसी नीति–विषयक में प्रत्यारोपित कर देने पर स्वतः उस नीति–विषयक समस्या का समाधान निकल आता gA

समय की कसौटी पर कौटिल्य का अर्थशास्त्र आज भी प्रासंगिक, U;k;kfpr ,o rd lxr xUFk gA

lUnHk lph %&

1- कौटिल्य का अर्थशास्त्र

2- शुक्रनीतिसार

3- Hkkt dk 0;fDrdYir :

4- चन्द्रेश्वर का नीतिरत्नाकर तथा नीतिप्रकाशिका

5- Hkkjfo dk fdjkrktuh;